

— सम् 1) sich anschmiegen, Jmd nahe rücken: तावन्त्याज्याञ्जलि कृत्वा स्नेहात्संश्लिष्य चोरसा R. 4, 10, 28. Kām. Nitis. 12, 12. समश्लिष्यस्तु काष्ठम् hat sich geklebt an P. 3, 1, 46, Schol. — 2) umfassen, umarmen: समुपाधाय मूर्धानं संश्लिष्य च पुनः पुनः । पुधिष्ठिरं च भीमं च MBh. 4, 2319. R. 5, 91, 17. Spr. (II) 2913. — 3) in unmittelbare Berührung bringen: पुगेर्युगानि संश्लिष्य युयुधुः MBh. 6, 3879. — partic. 1) angeschmiegt, fest anliegend, sich unmittelbar berührend, verbunden, vereinigt, zusammenhängend Çat. Br. 3, 3, 9, 14. संश्लिष्टा घृष्टुल्यो ज्ञायेन् TS. 8, 1, 9, 5. Kāṭh. 34, 9 (अ०). संश्लिष्टाङ्गे स्थिता MBh. 7, 1312. पद्मकाशकरी कृत्वा संश्लिष्टौ KATHAS. 65, 197. उरसा ० सर्पवचा Çāk. 170, v. l. Bṛāg. P. 5, 2, 4. यथा जतु च काष्ठं च पांसवशोदबिन्दवः । संश्लिष्टानि MBh. 12, 11947. fg. तथा कर्म च कर्ता च संश्लिष्टावितरेतरम् Spr. (II) 5106, v. l. प-रस्परं Suça. 4, 338, 11. तौ चिरवश्लिष्टसंश्लिष्टौ lange getrennt und nun vereinigt KATHAS. 74, 320. रजतं च सुवर्णं च संश्लिष्टे H. 1047. पृथिव्य-मिदं नित्यसंश्लिष्टमृकसामनी इव Çāk. zu Kūṇḍ. Up. S. 59. KULL. zu M. 2, 125. Comm. zu TS. Prāt. 2, 12 (अति०). 17, 4. वनोक्तं ० शरीर-कारिणाम् wohl so v. a. sich zusammenthuend, zusammen wohnend (संश्लिष्टमस्थिचर्ममात्रसंश्लेषवत् तच्च तच्छरीरं च तस्य कारिणो शरीरशेष-काणामित्यर्थः Nilak.) MBh. 12, 8883. mit सह verbunden: (अस्तिसहः) पाणिना सह संश्लिष्ट एकीभूत इव 10, 462. mit einem blossen instr.: पात्रं संश्लिष्टं वेदतृणैः Ācṣ. Çā. 4, 11, 5. मरुद्दामिव संश्लिष्टौ मरुद्दाम्या चन्द्रभास्करौ R. 5, 73, 48. किञ्चित्सोविताशया so v. a. ein wenig Hoff-nung schöpfend PAÑĀT. 143, 8. mit acc.: पृथात्मानं घात्मानं संश्लिष्टा जतु काष्ठवत् MBh. 12, 11949. häufig in comp. mit der Ergänzung: नदीं चाश्वमसंश्लिष्टाम् 4, 2867. 4, 2071. R. 5, 5, 12. HARIV. 2501. 6551 (संश्लिष्ट die neuere Ausg.). KATHAS. 38, 44. Vet. in LA. (III) 22, 18, v. l. सर्वं (स हि st. सर्व ed. Calc.) so v. a. in Allem enthalten MBh. 13, 6812. PAÑĀT. 4, 3, 33. सु० von einer Rede so v. a. wohl gefügt R. 3, 48, 3. संश्लिष्ट n. An-häufung: इदं फलानां संश्लिष्टम् hier sind Früchte aufgehäuft 2, 108, 7. — 2) verschwommen, in einander fließend, so dass die einzelnen Theile nicht ge-sondert hervortreten VS. Prāt. 4, 145. इषुरासीव संश्लिष्टः MBh. 7, 8639. न-क्षत्रस्य नृपते किञ्चित्संश्लिष्टमुपलक्ष्ये । मते पुरुषसिंहस्य पिपिडेके ऽस्याधिके यतः 14, 2581. fg. von einer Handlung, bei der man nicht zwischen gut und schlecht unterscheidet: अग्निप्रेतामसंश्लिष्टा कृत्वा चात्मकितो क्षि-याम् 12, 13875. ० कर्मन् adj. für den es gleichviel gilt, ob eine That gut oder böse ist: व्रात्याः 7, 5965. Spr. (II) 5412 (die Uebersetzung hiernach zu verbessern); vgl. 6664. — Vgl. संश्लिष्य u. s. w. — caus. 1) zusammenhän-gen (trans.) Ait. Br. 5, 32. vereinigen, zusammenbringen, in Berührung bringen mit KATHAS. 32, 141. परपुरुषानानीय तैः स्वभार्याः संश्लेषयते KULL. zu M. 8, 362. कर्जायावलीढे तु पङ्कजं मुखपङ्कजे । संश्लेषयित्वा HARIV. 7050. संश्लेषय शिः स्वं स्वं भर्तृधातृकबन्धयोः KATHAS. 80, 45. संश्लेषित vereinigt, verbunden MBh. 2, 735. मया संश्लेषिता भूमिरद्विर्व्योम च वा-युना । वायुश्च तेजसा सार्धम् 12, 13238. fg. — 2) übertragen auf: भर्तृरि पापं संश्लेषयति KULL. zu M. 8, 317. — 3) an sich heranziehen: घाटवि-कात्तपालान्संश्लेषयेद्दानवता च साम्रा Kām. Nitis. 15, 55.

— अभिसम् sich anschmiegen: अन्योऽन्यमभिसंश्लिष्य MBh. 6, 3127.

— उपसम्, partic. उपसंश्लिष्ट verbunden, zusammenhängend; davon ०त्व n. nom. abstr. MAITRAJUP. 3, 3.

श्लिषा (von 2. श्लिष) f. Umarmung TRIK. 3, 2, 4.

श्लिष्टद्वयक n. Doppelsinnigkeit als rhetorische Figur MALLIN. zu Çiç. 9, 36. Schol. zu Kāvya. 1, 84.

श्लिष्टवर्त्मन् m. das Zusammenkleben der Augenlieder Çāṅg. Sām. 1, 7, 87. sonst अश्लिष्टवर्त्मन् z. B. Suça. 2, 309, 11.

श्लिष्टतेप (श्लिष्ट + घा०) m. in der Rhetorik eine durch doppelsinnige Worte an den Tag gelegte Erklärung, dass man mit Etwas nicht ein-verstanden sei, Kāvya. 2, 160. Beispiel Spr. (II) 537.

श्लिष्टि (von 2. श्लिष) m. N. pr. eines Sohnes des Dhruva von der Çāmbhu HARIV. 67. fg. VP. 98.

श्लिष्टेक्ति (श्लिष्ट + उक्ति) f. ein doppel sinniger Ausdruck KATHAS. 73, 420.

श्लिपद n. Elephantiasis TRIK. 2, 6, 13. H. 465. HALĀJ. 2, 449. WISE 391. Suça. 4, 93, 1. 291, 13. fgg. 326, 9. Bṛāṇḍ. 7. Çāṅg. Sām. 1, 7, 53. Verz. d. B. H. No. 966. fgg. 975. Verz. d. Oxf. H. 308, b, 36. 313, b, 40. 316, b, 4.

श्लोपदप्रभव m. der Mangobaum ÇāḍAM. im ÇKDa.

श्लोपदापक (श्लोपद + घा०) 1) adj. die Elephantiasis vertreibend. — 2) m. Putranjiva (पुत्रंजीव) Roeburghii Wall. TRIK. 2, 4, 29.

श्लोपदिन् (von श्लोपद) m. mit der Elephantiasis behaftet VJUTP. 204. M. 3, 165.

श्लील adj. = श्लील Svāmin zu AK. 3, 1, 14 nach ÇKDa. H. 357. nur in der Verbindung श्ल० unschön, hässlich, unanständig (insbes. von Reden): तस्मादनर्कमश्लीलमप्रियं त्रैणिमब्रवीत् MBh. 7, 9403. 12, 13233. Rīgā-Tar. 3, 140. 6, 158. Schol. zu Kāvya. 1, 95. अश्लीलत्व zu 66. fg. Vgl. श्ल० (auch in den Nachträgen).

श्लेष (von 2. श्लिष) 1) m. nom. act. P. 3, 1, 141. Vop. 11, 3. a) das Haf-ten, Kleben an (loc.) TRIK. 3, 3, 319. यथा पुष्करपत्रेषु पतितास्तोषवि-न्दवः । न श्लेषमभिगच्छति Spr. (II) 5119. उत्तरपूर्वार्धयोश्च श्लेषविनाशो Bī-DA. 4, 1, 13. — b) Vereinigung, Verbindung; = संधि AK. 3, 3, 11. त्रि-मार्ग्याः H. 988. यथाम् HALĀJ. 2, 134. geschlechtliche Vereinigung: ततो गर्भः संभवति श्लेषात्स्त्रीपुंसयोः MBh. 13, 5427. — c) Umarmung UTTARAN. 113, 9 (153, 4). Spr. (II) 4281 (zugleich Zweideutigkeit). Sām. D. 67, 13. — d) das Zusammenkleben der Wörter (als rhetorische Figur) Kāvya. (II) 236, 1. Prātīpar. 67, b, 7. Sām. D. 614. बहूनामपि पदानामेकपद-वद्भासनात्मा Comm. Gegens. भङ्ग Viśavād. Comm. S. 5. Verz. d. Oxf. H. 120, a, 35. — e) in der Rhetorik eine durch Verbindung von Gegensätzen pikante paradoxe Situation Sām. D. 621. Beispiel Spr. (II) 2937. — f) Doppelsinnigkeit, Zweideutigkeit Sām. D. 641. 643. 705. 18, 11. fg. 130, 8. रागपदे श्लेषः 305, 15. Prātīpar. 94, b, 7. Verz. d. Oxf. H. 208, a, 5 v. u. b, 24. 211, b, 3. KūVALAJ. 74, b. Spr. (II) 4281 (zugleich Umarmung). प्रत्यक्षश्लेषमय (प्रबन्ध) Viśavād. Comm. S. 9. — g) An-gement (in grammat. Bed.) Nāṣas. 2, 2, 59. — 2) f. घ्रा Umarmung: अन्यो-ऽन्यश्लेषया (अन्योऽन्यश्लेषया ed. Bomb.) Bṛāg. P. 3, 20, 30. — Vgl. अस्तः० शब्द० (auch Verz. d. Oxf. H. 211, a, 11 v. u.).

श्लेषक (vom caus. von 2. श्लिष) adj. ankleben machend, Zusammen-hang herstellend Viśavād. 12, 18.

श्लेषण nom. ag. und act. (Dhātup. 17, 64) von 2. श्लिष; s. अस्तः०, लोक्०. श्लेषक m. = श्लेषम् ÇāḍAM. im ÇKDa.